

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

Dr. Pooja Kiran*

Lecturer in History, Government Girls Inter College, Kundarki (Moradabad)

सार – संसार में परमात्मा ने स्त्री-शक्ति का मुकाबला करने वाली कोई दूसरी शक्ति उत्पन्न नहीं की। वास्तव में भारतीय इतिहास में गौरवपूर्ण अध्याय के निर्माण कार्य में जितना सहयोग स्त्री शक्ति ने दिया है उतना अभी तक किसी ने नहीं दिया। आदिकाल में भी जब-जब देवासुर-संग्राम छिड़ा राक्षसी शक्ति को नष्ट करने के लिए देवी शक्ति का आश्रय लिया गया। भारत के स्वाधीनता संग्राम में आक्रमणकारियों के विरुद्ध सदैव स्त्री शक्ति अग्रणी रही। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अनेक दौरों से गुजरा। 1857 के विद्रोह में विश्व के सबसे महान् व शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी गई। 1857 के इस विद्रोह में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल जैसी वीरांगनाओं का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। गांधी युग में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आंदोलन में परिवर्तित हो गया। इस युग में सभी धर्मों व सम्प्रदायों के अनुयायियों तथा जनता के प्रत्येक वर्ग ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कार्य में महिलाएँ भी पीछे नहीं रही। आरंभ से लेकर अंत तक उन्होंने न केवल शंतिपूर्ण आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया अपितु वे क्रांतिकारी गतिविधियों में भी सक्रिय रहीं। गांधी जी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्षधर थे। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की बल्कि गिरफ्तार भी हुईं। कुल मिलाकर महिलाओं के अंदर इस समय जो राष्ट्रचेतना पैदा हुई थी उसने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति हैं जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से उन्मुक्त होकर लड़ सकती हैं। इस समय जिन स्त्रियों ने इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया था उनमें एक पंक्ति उनकी भी थी जो गांधी जी के अहिंसावादी नीति का अनुसरण कर रही थीं और दूसरी पंक्ति उनकी थी जिन्होंने क्रांति का मार्ग चुना था। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को महिलाओं ने विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया है।

-----X-----

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता-आन्दोलन का इतिहास स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अदभुत गाथा है। इस संघर्ष में पुरुषों और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। घर का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई, वह इतिहास की धरोहर है। सन् 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला ऐसा विस्फोट था, जिसकी नायक एक महिला थी, जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया। उसके लिये स्वयं अंग्रेज शासक भी प्रशंसा किये बगैर नहीं रह सके। सर हयूरोज को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि “सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थीं।” रामगढ़ की रानी ने जहाँ रणक्षेत्र में लड़ते-लड़ते प्राण दे दिये वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजों के

समक्ष आत्म समर्पण कर अपमानित होने के बजाए नेपाल की ओर चल पड़ी, जहाँ वनवास में उनकी मृत्यु हुई और जीनत महल को बर्मा में निर्वासित कैदी के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में स्थापना ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। इसकी स्थापना के कुछ वर्षों बाद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलाएं प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आने लगीं। 1890 के कलकत्ता अधिवेशन में स्वर्ण कुमारी देवी और श्रीमती कादम्बिनी गांगुली ने भाग लिया। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह सम्भवतः भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश का शुभारम्भ था और इसके बाद तो मातृभूमि की खातिर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ती ही चली गयी। इन महिलाओं को उत्साहित कर एवं उन्हें संगठित कर एक लक्ष्य महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाकर

दिया। इससे महिलाओं को न केवल एक उद्देश्य मिला अपितु उन्हें एक नयी दिशा भी मिली। जब 1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया, तो बड़ी संख्या में महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी शक्ति का परिचय दिया। स्वदेशी प्रचार के पक्ष में वातावरण बनाने के लिये विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी। शराब की दुकानें धरना देकर बंद कराई जाने लगी। उसी तरह 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तो हजारों की संख्या में महिलायें घरों से बाहर निकल आईं। उन्होंने तन-मन से इस आन्दोलन में सहयोग दिया। संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर और अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक गतिविधियों की बागडोर सम्भाली जब अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने सीखचों में जकड़कर रखा था। उस समय राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती सरोजनी नायडू, अरूणा आसिफ अली, श्रीमती सुचेता कृपलानी, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, एनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा।

निःसंदेह गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन से लेकर भारत की स्वाधीनता तक महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में जो योगदान था, वह भारतीय परिवेश में उनकी जागरूकता एवं परिवर्तनों को दर्शाता है। महिलाओं में सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा सामाजिक पिछड़ेपन की स्थिति को गांधीजी के दर्शन ने बदल दिया था। उनकी भीरुता का स्थान साहस ने ले लिया, उनके अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता के स्थान पर जागरूकता दिखाई देने लगी एवं उनमें राजनीति परिपक्वता का बोध होने लगा। कुल मिलाकर भारतीय महिलाओं के उत्थान का यह स्वर्णिम काल था।

असहयोग आन्दोलन

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजों की तन-मन-धन से सहायता की थी। उनको यह विश्वास था, कि युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार उन्हें कुछ राजनीतिक अधिकार अवश्य प्रदान करेगी। परन्तु युद्ध की समाप्ति के बाद भारतीयों को निराशा ही हाथ लगी। वास्तव में यह ब्रिटिश कूटनीति थी। इससे जनता में रोष व्याप्त हो गया। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध से भारतीयों में व्याप्त राष्ट्रीय चेतना में और अधिक वृद्धि हुई। रोलेट एक्ट, जलिया वाला बाग हत्याकांड, हंटर रिपोर्ट, तथा खिलाफत आन्दोलन इन सभी घटनाओं से संपूर्ण भारत की जनता के साथ-साथ गांधी जी भी असंतुष्ट थे। उन्होंने सरकार द्वारा प्रदत्त 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि को लौटा दिया तथा सत्याग्रह के माध्यम से असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात

किया। भारतीय राजनीति और स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में 1928 का वर्ष नये युग का प्रतीक था। इस वर्ष महात्मा गांधी का सक्रिय रूप से भारतीय राजनीति के रंगमंच पर पदार्पण हुआ जब उन्होंने असहयोग आन्दोलन की घोषणा की उनकी दृष्टि में ब्रिटिश सरकार से असहयोग आन्दोलन के लिये यह उपयुक्त अवसर था। सितम्बर 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन इस उद्देश्य से आयोजित किया गया था, जिसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा। चितरंजन दास जैसे नेताओं के विरोध के बावजूद यह प्रस्ताव भारी बहुमत से स्वीकार किया गया था।

दिसम्बर 1920 में नागपुर में हुए कांग्रेस के नियमित अधिवेशन में गांधी जी के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। इसके साथ ही राष्ट्रीय आन्दोलन एवं कांग्रेस पर महात्मा गांधी का असाधारण प्रभाव स्थापित हो गया। आन्दोलन को सफल बनाने के लिये न केवल पुरुषों ने बल्कि महिलाओं ने भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। गांधी जी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने का आह्वान किया जिसका उन्होंने अनुकूल प्रतिसाद दिया।

असहयोग आन्दोलन का उद्देश्य ब्रिटिश शासन तंत्र को पूरी तरह ठप्प करना था। इसके लिये ब्रिटिश भारत की समस्त राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक संस्थाओं के बहिष्कार का निश्चय किया गया। इस आन्दोलन के मुख्य प्रस्ताव में गांधी जी ने पूरे देश से आह्वान किया था, कि इस अहिंसात्मक आन्दोलन को तब तक चलाया जाये जब तक खिलाफत संबन्धी अन्याय दूर न हो जाये और स्वराज्य प्राप्त न हो जाये। आन्दोलन का कार्यक्रम निम्नवत् था:-

1. सरकारी स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार।
2. सरकारी पदों का त्याग।
3. चुनावों का बहिष्कार।
4. सरकारी अदालतों का बहिष्कार।
5. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।
6. सरकारी उत्सवों का बहिष्कार।
7. भारतीयों द्वारा मैसोपोटामिया में जाकर कार्य करने से इन्कार।

1857 का विद्रोह

भारत को स्वतंत्र कराने का जो अभियान था वह यद्यपि गांधी जी के राजनीति में आगमन के बाद व्यापक स्तर पर शुरू हुआ। परन्तु देश को स्वतंत्र कराने का अभियान बहुत पहले ही शुरू हो चुका था। 1857 के विद्रोह ने ब्रिटिश सत्ता का अंत करने के प्रयास को लेकर सर्वप्रथम शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी। “1857 के संग्राम का शुभारंभ सर्वप्रथम सैनिक छावनियों से हुआ। जवान मंगल पांडे द्वारा अपने सार्जेंट पर गोली चलाने के साथ ही क्रांति का बिगुल बज उठा।” 1 देखते ही देखते यह स्वतंत्रता संग्राम कानपुर, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, बरेली, जगदीशपुर और झाँसी आदि जगह पर फैल गया तथा नाना साहब, तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, मौलवी अहमदशाह, कुंवर सिंह जैसे अनेक नेता इस संग्राम से जुड़ गए। 1857 ई. की क्रांति को अंग्रेज विद्वान ‘सिपाही विद्रोह’ की संज्ञा देकर तथा एक आकस्मिक घटना बताकर टाल देते हैं। लेकिन “1857 का विद्रोह कोरा विद्रोह नहीं था बल्कि स्वाधीनता संघर्ष था। जिससे प्रायः सभी राष्ट्रवादी नेताओं ने बाद में प्रेरणा ली।” 2 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ वीर योद्धाओं ने अपनी जान दाँव पर लगाई वहीं हमारी वीरांगनाओं ने भी अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, अवन्ती बाई लोदी, टेस बाई और अजीजन जैसी अनेक वीरांगनाओं ने युद्ध में अंग्रेजों के सम्मुख अपना लोहा मनवाया।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

हमारे यहाँ युद्ध में अनेक देवियों ने शत्रुओं के दाँत खट्टे किए हैं। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक वीरांगनाओं ने देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया। देश के लिए प्राणों को उत्सर्ग करने वाली वीरांगनाओं में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम अग्रण्य है। जिन नारियों ने भारत माता के गौरव को ऊँचा किया है, उनमें महारानी लक्ष्मीबाई महान थीं। यही वह महिला थीं, जिसने भारत की स्वतंत्रता की मशाल लेकर, भारत की स्वाधीनता के लिए हँसते-हँसते अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। उनका शौर्य, साहस और बलिदान हमेशा भारतीय महिलाओं को वीरता की प्रेरणा देता रहेगा। हिन्दी के अनेक कवियों ने रानी की वीरता का गुणगान किया है।

बेगम हज़रत महल

‘10 मई, 1857 को मेरठ में विद्रोह के आरंभ होने के बाद 30 मई, 1857 को अवध में विद्रोह की घोषणा की गई।’ 4 अंग्रेजों के विरुद्ध इस विद्रोह की नेता अवध के नवाब वाजिद अली शाह

की बेगम, हज़रत महल थीं। 1 ‘बेगम हज़रत महल एक नर्तकी थी।’ 2 अपने सौन्दर्य व गुणों के कारण वे अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह की बेगम बन गईं। सुन्दरता के साथ-साथ हज़रत महल में प्रशासनिक योग्यता कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक और मोहक था। मई, 1857 के अंत में अवध में विद्रोह को भड़काने में बेगम हज़रत महल ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। शीघ्र ही विद्रोह की चिंगारी अवध के अन्य प्रदेशों में भी फैल गई। जून, 1857 के अंत तक लखनऊ की रेजीडेंसी, जहाँ अंग्रेजों ने शरण ली थी, शहर के अन्य भागों पर विद्रोहियों का अधिकार हो चुका था।

अजीजन बेगम

जब कानपुर में क्रांति की अग्नि प्रज्वलित हुई तो उसमें कानपुर की वीरांगना अजीजन का प्रशंसनीय योगदान था। ‘अजीजन बेगम अपने समय की प्रसिद्ध नर्तकी थी।’ 4 कानपुर में क्रांति के शुरू होने पर ‘अजीजन ने वीर, साहसी और निर्भय महिलाओं की एक टुकड़ी तैयार की।’ 5 उस महिला सैनिक दल की वीरांगनाएँ पुरुष वेश में घोड़ों पर सवार हाथ में नंगी तलवार लेकर निकल पड़ी, वे पुरुषों को स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए कहती, वे घायलों की सेवा सुश्रूषा करती तथा युद्धरत सैनिकों को दूध, मिठाई और फल बाँटती। जब आवश्यकता पड़ती तो रणभूमि में संकट तथा गोली वर्षा की परवाह न कर युद्धरत सैनिकों को कारतूस पहुँचाती। यह सब वीरांगना अजीजन की प्रेरणा तथा नेतृत्व का चमत्कार था कि परदे में रहने वाली स्त्रियाँ रणभूमि में थीं।

बंग-भंग एवं स्वदेशी आन्दोलन

हिन्दुस्तान में बीसवीं सदी का उदय स्वदेशी आन्दोलन के उदय के साथ जुड़ा है। स्वदेशी आन्दोलन वास्तव में बंगाल-विभाजन के विरोध में एक आन्दोलन के रूप में पैदा हुआ। उस समय उड़ीसा और बिहार भी इसी राज्य के हिस्से थे। असम 1874 में ही अलग हो गया था। इतने बड़े राज्य का प्रशासन चलाना वास्तव में कठिन था, लेकिन अंग्रेजों ने इस राज्य के बँटवारे का फैसला प्रशासनिक कारणों से नहीं, बल्कि राजनीतिक कारणों से लिया। 20वीं सदी के आरंभ से ही आभास हो रहा था कि भारत में राष्ट्रीय चेतना विकसित होती जा रही थी और जुझारू रूख अखितयार कर रही थी। भारतीय राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र था बंगाल। अंग्रेजों द्वारा बंग-भंग का कदम इसी जुझारू चेतना पर आघात करने और ‘फूट

डालो और राज करो' की नीति के अंतर्गत उठाया गया था, जिसका तीव्र विरोध हुआ।

एनी बेसेंट और होमरूल आन्दोलन

देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए न केवल भारतीय नेताओं ने अपनी जान की बाजी लगाई बल्कि अनेक विदेशी नागरिकों ने भी भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना योगदान दिया। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में एनी बेसेंट और उनके होमरूल आन्दोलन का विशेष योगदान रहा। एनी बेसेंट का जन्म अक्टूबर, 1847 में लंदन में हुआ था। "1893 में एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसाइटी के आमंत्रण पर भारत पहुँची।" एनी बेसेंट हिंदू धर्म से बहुत प्रभावित थी। उन्होंने हिन्दू धर्म, दर्शन और संस्कृति के अध्ययन के साथ-साथ हिंदू आचार-व्यवहार को भी आदर की दृष्टि से देखा। एनी बेसेंट ने भारतीयों को अपनी मान्यताओं के प्रति सम्मान करना सिखाया।

क्रांतिकारी गतिविधियाँ और महिलाएँ

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद अथवा आतंकवाद लाल-बाल-पाल घोष आदि के राजनीतिक उग्रवाद से सर्वथा भिन्न था। उग्रवादी उदारवादियों की राजनीतिक भिक्षावृत्ति की नीति से असन्तुष्ट होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सक्रिय विरोध का प्रतिपादन करते थे, लेकिन यह विरोध अथवा संघर्ष शान्तिमय और दबावपूर्ण होता था जिसमें हिंसा और तोड़-फोड़ को कोई प्रश्रय नहीं दिया गया था। इसके विपरित क्रांतिकारियों ने हिंसा और तोड़-फोड़ को अपना हथियार बनाया।

क्रांतिकारी 'बम्ब नीति' में विश्वास करते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उन्होंने गुप्त व खुली हत्याओं द्वारा सरकारी सम्पत्ति के विनाश, तोड़-फोड़ आदि का सहारा लेने में कुछ भी अनुचित नहीं समझा। आतंकवादी-क्रांतिकारी कोरे हत्यारे या डाकू नहीं थे- वे देशभक्त थे और मातृभूमि के लिए सिर कटा देने की तमन्ना रखते थे। क्रांतिकारी विदेशी शासकों के दिल में यह भय पैदा कर देना चाहते थे कि देशभक्तों की हत्याओं का बदला हत्याएँ हाँगी। 'रेन्ड के सहायक लेफ्टिनेन्ट जनरल डायर, सांडर्स आदि ब्रिटिश अधिकारियों की हत्याओं और 1907 में मिदानापुर के निकट उप-गवर्नर की रेलगाड़ी उड़ाने के प्रयास, क्रांतिकारियों द्वारा किए गए।' क्रांतिकारी अथवा आतंकवादी का विस्फोट महाराष्ट्र में हुआ, जहाँ 1899 में मिरेन्ड तथा ले. आयरेस्ट को गोली का शिकार बनाया गया। महाराष्ट्र में वीर सावरकर, श्यामजी वर्मा, गणेश सावरकर और चापेकर बन्धु, बंगाल में वीरेन्द्र कुमार घोष, भुवेन्द्र नाथ दत्त, पंजाब में सरदार अजीत सिंह, भाई परमानन्द, बालमुक्द तथा लाला हरदयाल प्रमुख क्रांतिकारी नेता थे। इंग्लैण्ड में श्याम जी कृष्णा

वर्मा, फ्रांस में मैडम कामा और अमेरिका में लाल हरदयाल ने क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन किया।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता आन्दोलन की क्रांतिकारी महिलाओं में एक और प्रमुख नाम उभर कर आता है- वह है 'दुर्गा भाभी' का। 'दुर्गा भाभी का जन्म 7 अक्टूबर, 1907 को इलाहाबाद में हुआ था।' दुर्गा भाभी भगवती बाबू जैसे महान क्रांतिकारी की पत्नी थी। उन्होंने अपने पति की क्रांतिकारी गतिविधियों में पूरा सहयोग दिया। वे दल के लिए पैसा इकट्ठा करती थी, क्रांति से संबन्धित परचे बाँटती थी, घर पर आए क्रांतिकारियों का स्वागत-सत्कार करती थी, उन्हें आश्रय देती थी। भगत सिंह द्वारा सांडर्स की हत्या करने पर वह भगत की पत्नी के रूप में उनके साथ कलकत्ता गई। भाभी ने इस जोखिम भरे रास्ते में आवश्यकता पड़ने पर उपयोग के लिए पिस्तौल भी छिपा रखी थी। 'भगवती बाबू अपनी पत्नी के इस साहसपूर्ण कार्य पर बहुत प्रसन्न हुए। भाभी ने गांधी जी से अन्य क्रांतिकारियों के साथ भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को छुड़ाने की शर्त वायसराय के सामने रखने के लिए कहा।' बम्बई में भाभी ने बाबा पृथ्वी सिंह आजाद के सहयोग से पुलिस कमिश्नर हेली को मारने की योजना बनाई लेकिन वह योजना सफल न हो सकी। इतिहास साक्षी है कि इस आदर्श पति-पत्नी ने वास्तव में ही, क्रांतिकारी देशभक्तों के साथ भैया-भाभी का संबंध निभाया। सरला देवी जिन्होंने स्वदेशी आन्दोलन और बंग-भंग आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उन्होंने भी अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और 1905 में बंगाल व पंजाब के क्रांतिकारियों के बीच संपर्क सूत्र का काम किया।

उपसंहार

महिलाओं ने देश के स्वतंत्रता समर की प्रत्येक रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्त्रियों के द्वारा अपने लिए मताधिकार की माँग को लेकर लड़ना हो या देश को स्वतंत्र कराने में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की बात हो, स्त्रियों ने सभी क्षेत्रों में पूरी तत्परता के साथ काम किया। वैदिक काल के बाद भले ही नारी इस समय पुरुषों से अनेक क्षेत्रों में पीछे थी लेकिन इन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लिया। असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन पड़ा। स्त्रियों ने देश के प्रति प्रेम भावना का परिचय देते हुए व उसे स्वतंत्र कराने के लिए सभी तरीकों से अपना योगदान दिया। शांति प्रिय आंदोलनों से

लेकर क्रांतिकारी आन्दोलनों में स्त्रियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विपिन चन्द्र, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, पृ. सं. 2
2. विश्व प्रकाश गुप्ता, मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं, पृ. सं. 91
3. डॉ. एस.एल. नागोरी, कान्ता नागोरी, भारतीय वीरांगनाएँ, पृ. सं. 14-15
4. विश्वप्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता-संग्राम और महिलाएँ, पृ. सं. 94
5. एल.पी. माथुर, भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी, पृ. सं. 15
6. शालिनी सक्सेना - स्वाधीनता आंदोलन में मध्यप्रान्त की महिलाएं, पृ. सं. -2
7. आशारानी व्होरा - महिलाएं और स्वराज्य, पृ. सं.- 146
8. प्रयागदत्त शुक्ल - क्रांति के चरण, पृ. सं.- 84
9. मोहम्मद शमीम - छत्तीसगढ में गांधीवादी आन्दोलन में छात्रों की भूमिका (अप्रकाशित शोध प्रबंध), पृ सं. 19
10. विजय एग्न्यू - वीमने इन इण्डियन पालिटिक्स, पृ सं. -8
11. राज लक्ष्मी गौड़ - नारी जागरण और गांधी जी (लेख), मध्यप्रदेश संदेश, 1971
12. जीवंतराम भगवानदास - महात्मा गांधी जी जीवन और चिंतन, कृपलानी पृ. सं. 91

Corresponding Author

Dr. Pooja Kiran*

Lecturer in History, Government Girls Inter College,
Kundarki (Moradabad)

poojakiransingh11@gmail.com